15/05/11

डायरी का एक पन्ना

दिनांक : 10/0 /11

आज का दिन बहुत लंबा था। सुबह उठते ही मुश्किल शुरू हो गई। रॉबॉक्स का कवर लेना भूल गया और वापस घर लौटकर कवर लेना पड़ा। फिर बस के लिए बढ़ेर से आया। स्कूल पहुँचने के बाद पहला वर्ग भौतिकी का था। भौतिकी में आक्टिविटि की और उसके बाद हिंदी अध्यापिका ने सी. भी. एस. ई. आइ के बारे में कहा। बहुत मनोरंजक थे। अंग्रेज़ी और अरबिक के बाद ब्रेक था। उसके बाद दो पिरियड गणित था। एक पिरिडय में परीक्षा ली गई। फिर एकॉनॉमिक्स पिरियड में भी परीक्षा थी। एक ही दिन में दो परीक्षा। फिर मुझे याद आया कि दो परीक्षा समाप्त होने के कारण आज होगा। स्कूल के बाद, घर पहुँचते ही माता जाकर खेलने के लिए गया और वापस आया। दसवी दर्जा में हर दिन पढ़ना अवश्य है, इसी के कारण, मैंने गणित और भौतिकी पढ़ा। फिर डिनर खाने के समय माता-पिता से सी.बी.एस.ई. आइ के बारे में बताया और वे भी

मौखिक :

1.) कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन क्यों महत्वपूर्ण था?

उ.) कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन महत्वपूर्ण था क्योंकि उस दिन आज़ादी मनाई जा रही थी।

2) सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था?

उ.) सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णदास पर था।

3.) विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उ.) मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा तो पुलिस ने उनको पकड़ लिया तथा और लोगों को मारा या हटा दिया।

4.) लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?

उ.) लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर आज़ादी मनाई जा रही थी और इस बात का संकेत दे रही थी कि वे किसी के गुलाम नहीं हैं।

5.) पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को क्यों घेर लिया था?

उ.) पुलिस ने स्वतंत्रता मनाने वालों को रोकने के लिए पार्कों तथा मैदानों को घेर लिया था।

लिखित

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए:-

1.) 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गई?

उ.) बड़े बाज़ार के प्रायः मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और कई मकान तो ऐसे सजाए गए थे कि ऐसा मालूम होता था कि मानो स्वतंत्रता मिल गई हो। कलकत्ते के प्रत्येक भाग में ही झंडे लगाए गए थे। जिस रास्ते से मनुष्य

जाते थे, उसी रास्ते में उत्साह और नवीनता मालूम होती थी। लोगों का कहना था कि ऐसी सजावट पहले नहीं हुई।

2) 'आज जो बात थी वह निराली थी'- किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए-

उ) सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णदास पर था। स्त्री समाज अपनी तैयारी में लगा था। जगह-जगह से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने की तथा ठीक स्थान पर पहुँचने की कोशिश कर रही थी। मोनुमेंट के पास जैसा प्रबंध भार में था वैसा करीब एक बजे नहीं रहा। तीन बजे से ही मैदान में हजारों आदमियों की भीड़ होने लगी और लोग टोलियाँ बना-बनाकर मैदान में घूमने लगे। उस दिन जो बात थी वह निराली थी।

3) पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?

उ) पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था कि अमुक-अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। जो लोग काम करने वाले थे उन सबको इंसपेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी कि आप यदि सभा में भाग लेंगे तो दोषी समझे जाएँगे। इधर कौंसिल की तरफ से नोटिस निकल गया था कि मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।

4) धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

उ) सुभाष बाबू बड़े ज़ोर से वंदे मातरम् बोलते थे, पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। क्षितीश चटर्जी का फटा हुआ सिर देखकर तथा उसका बहता हुआ खून देखकर

आँख मिच जाती थी। उधर स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़ झंडा फहरा रही थीं और घोषणा पढ़ रही थीं। स्त्रियाँ बहुत बड़ी संख्या में पहुँच गई थीं। प्रायः सबके पास झंडा था। जो वालेंटियर गए थे वे अपने स्थान से लाठियाँ पड़ने पर भी हटते नहीं थे। सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठाकर लालबाज़ार लॉकअप में भेज दिया गया। कुछ देर बाद ही स्त्रियाँ जुलूस बनाकर वहाँ से चली। साथ में बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई। बीच में पुलिस कुछ ठंडी पड़ी थी, उसने फिर डंडे चलाने शुरू कर दिए। अबकी बार भीड़ ज़्यादा होने के कारण बहुत आदमी घायल हुए। धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया।

5) सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?

उ) सुभाष बाबू बड़े ज़ोर से वंदे मातरम् बोलते थे, पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। उधर स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़ झंडा फहरा रही थीं और घोषणा पढ़ रही थी। जो वालेंटियर गए थे वे अपने स्थान से लाठियाँ पड़ने पर भी हटते नहीं थे। सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और स्त्रियाँ जुलूस बनाकर वहाँ से चली। इस प्रकार स्त्रियों पुलिस के लाठियाँ खाकर तथा गिरफ्तार होकर सुभाष बाबू के जुलूस में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

6) जुलूस के लालबाज़ार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?

(Ans.) जुलूस के लाल बाज़ार आने पर भीड़ बेकाबू हो गई। पुलिस डंडे बरसा रही थी, लोगों को लॉकअप में भेज रही थी। स्त्रियाँ भी अपनी गिरफ्तारी दे रही थी। दल के दल नारे लगा रहे थे। लोगों का जोश बढ़ता ही जा रहा था। लाठीचार्ज से लोग घायल हो गए थे। खून बह रहा था। चीख पुकार मची थी फिर भी उत्साह बना हुआ था।

'जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था। पाठ के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उ.) इस समय देश की आज़ादी के लिए हर व्यक्ति अपना सर्वस्व लुटाने को तैयार था। अंग्रेज़ों ने कानून बनाकर आन्दोलन, जुलूसों को गैर कानूनी घोषित किया हुआ था परन्तु लोगों पर इसका कोई असर नहीं था। वे आज़ादी के लिए अपना प्रदर्शन करते रहे, गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का प्रयास करते रहे थे।

उ.) सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में कलकत्ता वासियों ने स्वतंत्रता दिवस मनाने की तैयारी ज़ोर-शोर से की थी। पुलिस की सख्ती, लाठी चार्ज, गिरफ़्तारियाँ, इन सब के बाद भी लोगों में जोश बना रहा। लोग झंडे फहराते, वंदे मातरम बोलते हुए, खून बहाते हुए भी जुलूस निकालने को तत्पर थे। जुलूस टूटता फिर बन जाता। कलकत्ता के इतिहास में इतने प्रचंड रूप में लोगों को पहले कभी नहीं देखा गया था।

3) डा. दास गुप्ता लोगों की फोटो बिचवा रहे थे। इससे अंग्रेजों का जुल्म का पर्दाफाश किया जा सकता था, दूसरा यह भी पता चल सकता था कि बंगाल में स्वतंत्रता की लड़ाई में बहुत काम हो रहा है।